Page 1

MA Semester II

Unit I, Paper 5

Cognitive Psychology

Topic – Perceptual Learning

यदि दो व्यक्ति एक ही घटना या वस्तु का प्रत्यक्षण कर रहे होते हैं तो दोनों का प्रत्यक्षण एक समान न होकर एक दूसरे से भिन्न होता है अर्थात प्रत्यक्षण में वैयक्तिक भिन्नता होती है।

व्यक्ति का प्रत्यक्षण भिन्न कारकों द्वारा प्रभावित होता है उनमें से एक प्रमुख कारक सीखना है व्यक्ति अपने बीते दिनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हैं इन अनुभवों में भिन्नता होती है जिनके कारण एक ही वस्तु या घटना का प्रत्यक्षण व्यक्ति भिन्न-भिन्न ढंगों से करता है जैसे राम एक व्यक्ति है जो सोहन के साथ उद्दण्डता के साथ व्यवहार करता है और जो मोहन के साथ विनम्रता के साथ व्यवहार करता है अर्थात एक ही व्यक्ति राम के प्रति सोहन का कटुता का है परन्तु मोहन का गत अनुभव मधुरता का है अतः सोहन राम को एक अभद्र व्यक्ति होने का प्रत्यक्षण करेगा परन्तु मोहन उसी राम को एक भद्र व्यक्ति होने का प्रत्यक्षण करेगा। अतः उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की अनुभूति या गत इतिहास या उसके अधिगम या सीखना का प्रत्यक्षण काफी प्रभाव पड़ता है।

प्रत्यक्षणात्मक सीखना उत्पन्न हो जाती है
फलस्वरूप दोनों शब्दों एक विशेष का ...
हैं। गिब्सन (Gibson, 1969) के अनुसार
परिभाषित किया गया है जो निम्न है - वातावरण
के उत्तेजनाओं से प्राप्त अनुभूति या अभ्यास के
फलस्वरूप व्यक्ति की इस क्षमता में वृद्धि
प्रत्यक्षणात्मक सीखना कहा जाता है जिसके द्वारा वह
वातावरण से अधिक से अधिक सूचना को ग्रहण
कर पाता है अतः स्पष्ट है कि प्रत्यक्षणात्मक सीखना
एक प्रकार का अनुकूलनात्मक सीखना है और यह
यह पता चलता है कि प्रत्यक्षण की प्रक्रिया सीखने
द्वारा काफी प्रभावित होता है।

गिब्सन ने यह बतलाया है कि जब कोई व्यक्ति
किसी कार्य विशेष का लगातार कार्य करने का विशेष
रूप से प्रशिक्षण लेता है तो उस कार्य से
संबंधित वस्तुओं का प्रत्यक्षण अन्य दूसरे व्यक्ति
जिन्हें इस तरह का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है, से भिन्न
होता है। प्रत्यक्षण के इस तरह के अन्तर का
कारण प्रत्यक्षणात्मक सीखना है। उदाहरण के
अनुसार एक प्रशिक्षित पक्षीविज्ञानी विभिन्न
प्रकार की पक्षियों की आवाजों तथा आकृति
और संरचना की आवाजों से समझ लेता है परन्तु
सामान्य व्यक्ति के लिए ऐसा करना कठिन
होता है। जब कोई सामान्य व्यक्ति भी इस तरह
प्रत्यक्षणात्मक सीखना पूरा कर लेता है तो वह
पक्षियों की आवाजों को समझने के और
कोई अन्तर नहीं रह जाती है।

लिए देखा गया है कि कोई नेत्रहीन व्यक्ति अपनी छड़ी को जमीन पर पटकता है, पटककर विशेष प्रकार की आवाज उत्पन्न होता है और उस पर उस जमीन के आकार तथा बनावट का अनुमान लगाता है, और उसी ढंग से अर्थ लगाता है। सामान्य व्यक्ति के लिए इस ढंग के आवाज से इस तरह का अर्थ निकालना कठिन है।

अतः प्रत्यक्षात्मक सीखना व्यक्ति के उस प्रक्रम से संबंधित होता है जिसके सहारे वह वातावरण के वस्तुओं के बारे में विशेष रूप से अर्थ निकालने में समर्थ होता है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara